खण्ड - अ

1. (d) नीचे की ओर ढलवां सीधी रेखा होगा। 1

2. $p_1x_1 + p_2x_2 \leq m$ 1

3. (a) दायीं ओर खिसकता है। 1

4. सामान्य वस्तु की कीमत और मांग में विपरीत सम्बन्ध होने के कारण मांग की कीमत लोच के माप में ऋणात्मक चिन्ह होता है जबकि पूर्ति की कीमत लोच के माप में धनात्मक चिन्ह होता है क्योंकि वस्तु की कीमत और पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। 3

5.

वस्तु X (इकाईयाँ)	वस्तु Y (इकाईयां)	सी. रूपान्तरण दर
0	8	-
1	6	2Y:1X
2	4	2Y:1X
3	2	2Y:1X
4	0	2Y:1X

1½

क्योंकि सीमान्त रूपान्तरण दर स्थिर है उत्पादन संभावना वक्र नीचे की ओर ढलवां सीधी रेखा होगी। 1½

6. स्वच्छता बिमारी को दूर करती है और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इससे काम से अनुपस्थिति कम होती है, कार्यकुशलता बढ़ती है और देश की उत्पादन क्षमता बढ़ती है। अतः उत्पादन संभावना वक्र दाँयी ओर खिसक जाएगी। 3

अथवा

बड़ी मात्रा में विदेशी पूँजी के बाहर जाने से संसाधन घट जाएँगे और देश की उत्पादन क्षमता गिर जाएगी। इससे उत्पादन संभावना वक्र नीचे की ओर खिसक जाएगी। 3

(रेखाचित्र की आवश्यकता नहीं है।)

7.

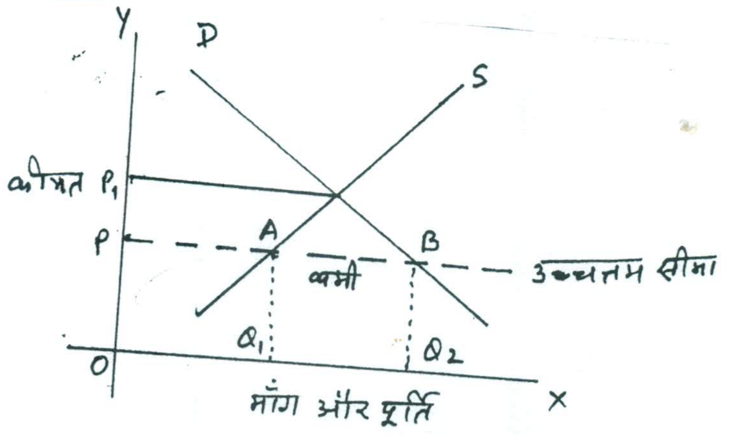

1

सरकार द्वारा किसी वस्तु की कीमत पर उच्चतम सीमा लगाना ही उच्चतम कीमत सीमा निर्धारण कहलाता है। उदाहरण के लिए रेखाचित्र में OP उच्चतम कीमत सीमा है और OP_1 संतुलन कीमत है। इस कीमत पर उत्पादक PA (या OQ_1) मात्रा सप्लाई करना चाहते हैं जबकि उपभोक्ता PB (या OQ_2) मात्रा खरीदना चाहते हैं। इस उच्चतम कीमत सीमा निर्धारण से वस्तु की सप्लाई AB (Q_1Q_2) कम हो गई। ऐसी स्थिति में काला बाजारी हो सकती है। 2

दृष्टिहीन परीक्षार्थियों के लिए:

उपभोक्ता से जो कीमत एक वस्तु के उत्पादक ले सकते हैं उस पर सरकार द्वारा एक अधिकतम सीमा लगाने को उच्चतम कीमत सीमा निर्धारण कहते हैं। | 1

उच्चतम कीमत सीमा संतुलन कीमत से कम होती है इसलिए माँग बढ़ जाती है और पूर्ति कम हो जाती है। इससे काला बाजारी हो सकती है। | 2

8 इस विशेषता की सार्थकता यह है कि बाजार में विक्रेताओं की संख्या इतनी अधिक होती है कि कोई भी एक विक्रेता कीमत को प्रभावित नहीं कर सकता क्योंकि बाजार में उसका हिस्सा नगण्य होता है। | 3

9 अर्थशास्त्र में आगतों पर किए गए व्यय, मालिक द्वारा प्रदान की गई आगत सेवाओं पर अन्तर्निहित व्यय और सामान्य लाभ के योग को लागत कहते हैं। | 1

यदि सी. लागत < औ. परिवर्ती लागत तो औ. प. ला. घटेगी

यदि सी. लागत = औ. प. लागत तो औसत प. लागत स्थिर रहेगी।

यदि सी. लागत > औ. प. लागत तो औ. प. ला. बढ़ेगी

(रेखाचित्र की जरूरत नहीं है) | 1×3

अथवा

उत्पादन के बाजार मूल्य को अर्थशास्त्र में संप्राप्ति कहते हैं। | 1

या उत्पादन के बेचने मिली राशी।

यदि सी. संप्राप्ति > औ. संप्राप्ति तो औ. संप्राप्ति बढ़ेगी

यदि सी. संप्राप्ति = औ. संप्राप्ति तो औ. संप्राप्ति स्थिर रहेगी

यदि सी. संप्राप्ति < औ. संप्राप्ति तो औ. संप्राप्ति घटेगी | 1×3

10

कीमत	व्यय	माँग
5	60	12
4	60	15

$1\frac{1}{2}$

माँग की लोच $= \frac{\text{की.}}{\text{माँग}} \times \frac{\Delta \text{माँग}}{\Delta \text{कीमत}}$ | 1

$= \frac{5}{12} \times \frac{3}{-1}$ | 1

$= -1.25$ | ½

(यदि केवल अन्तिम उत्तर दिया हो तो कोई अंक न दें)

11 संतुलन की स्थिति दी हुई है। माँग कम हो जाती है। इससे पूर्ति आधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती है पूर्ति आधिक्य से विक्रेताओं में प्रतियोगिता होती है और कीमत घट जाता है। कीमत घटने से माँग बढ़ती है और पूर्ति घटती है। कीमत तब तक घटेगी जब तक बाजार में संतुलन की स्थिति न आ जाए। 6.

12 उत्पादक के संतुलन की दो शर्ते हैं :

(i) सीमान्त लागत = सीमान्त संप्राप्ति और

(ii) संतुलन के बाद सी. लागत > सी. संप्राप्ति

मान लीजिए सी. ला. > सी. संप्राप्ति। ऐसी स्थिति में सीमान्त लागत औसत सीमान्त संप्राप्ति में सापेक्षिक परिवर्तनों के अनुसार उत्पादन में परिवर्तन करना लाभप्रद होगा। ये परिवर्तन तब तक किए जाएँगे जब तक सी. ला. और सीमान्त संप्राप्ति बराबर न हो जाए सीमान्त लागत यदि सीमान्त संप्राप्ति से कम है तो उत्पादक के लिए उत्पादन बढ़ाना लाभप्रद होगा। वह तब तक उत्पादन बढ़ाएगा जब तक सी. ला. और सी. संप्राप्ति बराबर न हो जाएँ। 3

उत्पादक के संतुलन के लिए सीमान्त लागत और सीमान्त संप्राप्ति की समानता पर्याप्त शर्त नहीं है। मान लीजिए सीमान्त लागत और सीमान्त संप्राप्ति का व्यवहार इस प्रकार का है कि एक और इकाई का उत्पादन करने पर सीमान्त लागत सीमान्त संप्राप्ति से कम हो जाती है। इस स्थिति में फर्म के लिए उत्पादन बढ़ाना लाभप्रद होगा। अत: सी. ला. और सी. संप्राप्ति की समानता संतुलन की स्थिति सुनिश्चित नहीं करती। लेकिन यदि उत्पादन के ~~जिस~~ ऐसे स्तर पर सीमान्त लागत और सीमान्त संप्राप्ति बराबर है जिसके बाद उत्पादन बढ़ाने पर सीमान्त लागत सीमान्त संप्राप्ति से अधिक है तो उत्पादक के लिए उतना उत्पादन करना सबसे अधिक लाभप्रद होगा जिस पर सी. ला. और सी. संप्राप्ति बराबर हैं। 3

13.

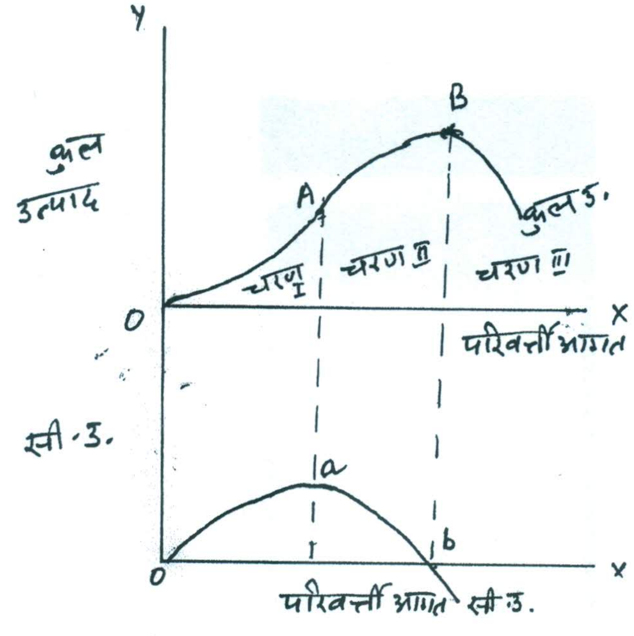

3

चरण I : कुल उत्पाद बढ़ती हुई दर से बढ़ता है। सीमान्त उत्पाद बढ़ता है। रेखाचित्र में ऐसा A बिन्दु तक होता है।

चरण II : कुल उत्पाद घटती हुई दर से बढ़ता है और सीमान्त उत्पाद घटता है लेकिन धनात्मक होता है। A से B तक

चरण III : कुल उत्पाद घटता है। सी. उत्पाद घटता है और ऋणात्मक होता है। यह स्थिति B बिन्दु के बाद की है। 3 × 3

केवल दृष्टिहीन ~~छात्रों~~ परीक्षार्थियों के लिए

परिवर्ती आगत	कुल उ.	सी. उत्पाद
1	6	6
2	20	14
3	32	12
4	40	8
5	40	0
6	37	−3

3

चरण I : कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है, सीमान्त उत्पाद बढ़ता है। 2 इकाई तक

चरण II : कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है और सी. उत्पाद घटता है लेकिन धनात्मक होता है। 3 से 5 इकाई तक। 3

चरण III : कुल उत्पाद घटता है और सी. उत्पाद घटता है और ऋणात्मक होता है। 6 इकाई से आगे।

14. की.$_x$ = 3 की.$_y$ = 3 और सी. प्रतिस्थापन दर = 3

उपभोक्ता जब संतुलन में होता है तब

$$\text{सी. प्र. दर} = \frac{\text{की.}x}{\text{की.}y}$$

दिए हुए मूल्यों के आधार पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है ; सी. प्र. दर > $\frac{\text{की}\,x}{\text{की}\,y}$ क्योंकि $3 > \frac{3}{3}$ 3

सी. प्र. दर के कीमतों के अनुपात से अधिक होने का अर्थ है कि उपभोक्ता बाजार की तुलना x वस्तु की एक और इकाई के लिए अधिक देने को तैयार

उपभोक्ता x की अधिक इकाई खरीदना शुरू कर देगा। ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सी. प्रतिस्थापन दर ~~घटेगी~~ घटने लगेगी और यह कीमतों के अनुपात के बराबर हो जाएगी। उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में पहुँच जाएगा। 3

(रेखाचित्र नहीं चाहिए)

अथवा

कीमत$_x$ = 4 कीमत$_y$ = 5 सी.उ.$_x$ = 5 सी.उ.$_x$ = 4

उपभोक्ता के संतुलन की स्थिति में $\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{की.}x} = \frac{\text{सी.उ.}y}{\text{की.}y}$ 3

दिए हुए मूल्यों के आधार पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है क्योंकि $\frac{5}{4} > \frac{4}{5}$ यानि $\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{की.}x} > \frac{\text{सी.उ.}y}{\text{की.}y}$

x की प्रति रु. सी.उ. > y की प्रति रु. सी.उ.

उपभोक्ता x की अधिक और y की कम मात्रा खरीदना शुरू कर देगा। इसके फलस्वरूप सी.उ.x घटेगी और सी.उ.y बढ़ेगी। उपभोक्ता की यह प्रतिक्रिया उस समय तक जारी रहेगी $\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{की.}x}$ और $\frac{\text{सी.उ.}y}{\text{की}\,y}$ बराबर न हो जाए। 3

इनके बराबर होने पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में ~~आ~~ आ जाएगा।

15	(b) राजकोषीय घाटा	1
16	अर्थव्यवस्था में एक निश्चित अवधि में किए जाने वाली अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के प्रत्याशित उत्पादन के मूल्य को समग्र पूर्ति कहते हैं।	1
17	(b) $\frac{1}{\text{सी. बचत प्रवृति}}$	1
18	(a) में वृद्धि की संभावना होती है।	1
19	(c) लाभांश	1
20	विदेशों को मशीन बेचना वस्तु का निर्यात है और इसे चालू लेखा में दर्ज किया जाता है।	1½
	इससे विदेशी विनिमय प्राप्त होता है अतः इसे जमा की ओर दिखाया जाता है।	1½
21	$\text{वास्तविक सकल देशीय उ.} = \frac{\text{मौद्रिक सकल देशीय उ.}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$	1½
	$= \frac{1200}{120} \times 100$	1
	$= 1000$	½
22	'पूंजी खाते लेखा' में दर्ज किए जाने वाले लेन देन के विस्तृत वर्ग: (1) विदेशों से और विदेशों को उधार (2) विदेशों से और विदेशों में निवेश (3) विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधि में वृद्धि और कमी	3×3
	अथवा चालू लेखा में दर्ज किए जाने वाले लेन देन के विस्तृत वर्ग: (1) वस्तुओं का निर्यात और आयात (2) सेवाओं का निर्यात और आयात (3) विदेशों से और विदेशों को कारक आय (4) विदेशों से और विदेशों को हस्तांतरण (कोई तीन)	1×3

23	राष्ट्रीय आय = स्वायत्त उपभोग + सी.उ.पृ.(रा.आय) + निवेश 1000 = स्वायत्त उपभोग + 0.8 (1000) + 100 स्वायत्त उ. = 1000 − 800 − 100 = 100	1½ 2 ½
24	देश में करेंसी जारी करने का अधिकार केवल केन्द्रीय बैंक को होता है। इससे वित्तीय प्रणाली में कुशलता बढ़ती है। इससे करेंसी संचालन में एकरूपता आती है और मुद्रा पूर्ति पर केन्द्रीय बैंक का नियंत्रण हो जाता है।	3
	अथवा	
	केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंकर के रूप में कार्य करता है। यह सरकार के लिए प्राप्तियाँ स्वीकार करता है और भुगतान करता है। यह सरकार के लिए विनिमय संबंधी, प्रेषण और अन्य सामान्य बैंकिंग कार्य करता है। यह सार्वजनिक ऋण का प्रबंधन करता है और सरकार को ऋण भी देता है।	3
25	अधिक बैंक खाते खोलने से बैंक जमाएँ अधिक होंगी। अधिक जमाओं से वाणिज्यों बैंको की ऋण देने की सामर्थ्य बढ़ जाती है। बैंकों द्वारा अधिक ऋण देने से देश में अधिक निवेश होता है। अधिक निवेश से राष्ट्रीय आय बढ़ती है।	4
26.	सरकार संसाधनों के आवंटन को करों, आर्थिक सहायता द्वारा और स्वयं उत्पादन करके प्रभावित कर सकती है। शराब, सिगरेट जैसी हानीकारक वस्तुओं का उत्पादन करने वाली उत्पादन इकाईयों पर अधिक कर लगा सकती है। जनता के लिए वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए करों में रियायत और आर्थिक सहायता दे सकती है। ऐसी वस्तुओं और सेवाओं का स्वयं उत्पादन कर सकती है जिनसे पर्याप्त लाभ न मिलने के कारण निजी क्षेत्र उनका उत्पादन नही करता।	6

27	(i) फर्म द्वारा चार्टर्ड अकाउन्टेंट को फीस का भुगतान फर्म की मध्यवर्ती लागत है। इसलिए इसे राष्ट्रीय में शामिल नही किया जाएगा।	2
	(ii) फर्म द्वारा निगम कर का भुगतान एक हस्तांतरण भुगतान है, इसलिए इसे राष्ट्रीय आय में शामिल नही किया जाता।	2
	(iii) फर्म द्वारा स्वयं उपयोग के लिए खरीदा गया फ्रीज निवेश व्यय है इसलिए इसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है।	2
28	स्फीतिकारी अंतर : जब समग्र माँग पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति से अधिक होती है तो इस अन्तर को स्फीतिकारी अंतर कहते है।	2
	पुनर्खरीद दर वह ब्याज दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक कम अवधि के लिए वाणिज्य बैंकों को ऋण देता है। जब केन्द्रीय बैंक पुनर्खरीद दर बढ़ाता है तो वाणिज्य बैंकों को केन्द्रीय बैंक से ऋण लेना महँगा हो जाता है। इस कारण वह अपनी ब्याज दर भी बढ़ा देते है जिससे बैंकों से ऋण लेना महँगा हो जाता है। अत: लोग कम ऋण लेते है और कुल व्यय कम हो जाता है। इससे स्फीतिकारी अन्तराल कम हो जाता है।	4
	अथवा	
	अपस्फीतिकारी अंतर : जब अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र पूर्ति से कम होती है तो इस अंतर को अपस्फीतिकारी अंतर कहते है।	2

खुले बाजार के कार्यकलाप : केन्द्रीय बैंक द्वारा खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों को खरीदने व बेचने को, खुले बाजार के कार्यकलाप कहते हैं। केन्द्रीय बैंक बाजार से सरकारी प्रतिभूतियां खरीदकर अपस्फीतिकारी अन्तर को कम कर सकता है। जो इन प्रतिभूतियों को बेचते हैं उन्हें केन्द्रीय बैंक चैकों द्वारा भुगतान करता है। ये चैक वाणिज्य बैंकों में जमा कराए जाते हैं। इससे बैंकों की ऋण देने की सामर्थ्य बढ़ जाती है, और वे अधिक ऋण देते हैं। खर्चा बढ़ जाता है और अपस्फीतिकारी अन्तराल कम हो जाता है। 4

29 बाजार की. पर स. रा. उ. = viii + (i + vi) + vii + xii + (v − ix) + x + xi 1½

= 500 + 100 + 20 + 110 + 200 + 140 − 120 + (−10) + 150 1

= 1090 करोड़ रु. ½

नि. राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = बाजार की. पर स. रा. उ. − (v − ix) − ii 1½

= 1090 − (140 − 120) − 30 1

= 1040 करोड़ रु. ½